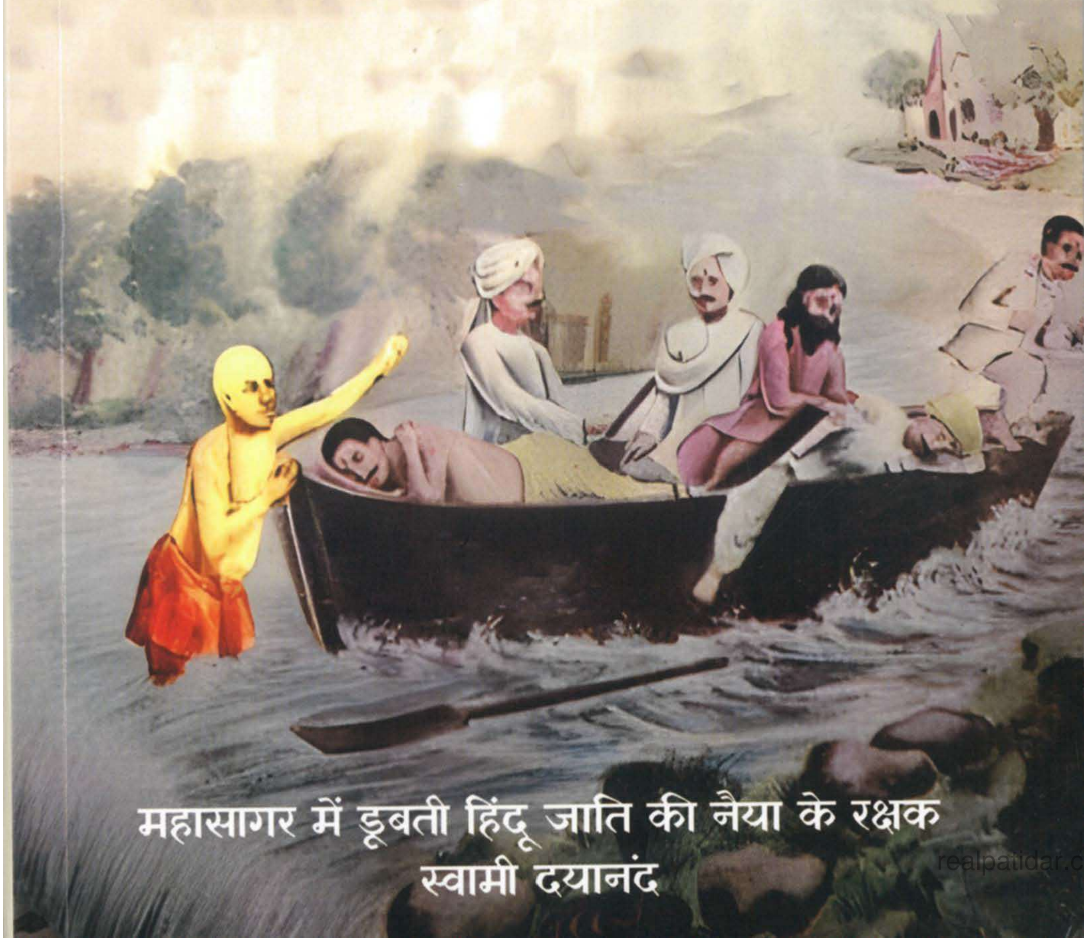
आर्यसमाज और शुद्धि आंदोलन

लेखक

डॉ० विवेक आर्य



आर्यसमाज और शुद्धि आंदोलन

लेखक
डॉ० विवेक आर्य



महासागर में डूबती हिंदू जाति की नैया के रक्षक
स्वामी दयानंद

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज और शुद्धि आंदोलन

[भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रकाशित]

लेखक

डॉ. विवेक आर्य

प्रकाशक

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

दिल्ली–110 007

Published in the year : 2023

प्रकाशक : **भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा**
6949, बिड़ला लाइन,
दिल्ली-110 007
संपर्क सूत्र : 83680 08215, 97185 50459

मूल्य : 500.00 रुपये
(यह राशि दान रूप में शुद्धि सभा को सहयोग है)

शब्द-संयोजक : **आर्य लेजर प्रिंट्स**, चलभाष : 95215 13550

मुद्रक : **पर्ल ऑफ़सेट प्रेस प्राइवेट लमिटेड**
S-133, पञ्चशील पार्क (नई दिल्ली)-110 017

समर्पण

यह पुस्तक शुद्धि आन्दोलन के प्राण महान् संगठनकर्ता, धैर्य की मूर्ति, अदम्य साहस के प्रतीक, गुरुकुल शिक्षा पद्धति के उद्धारक, त्यागी, तपस्वी, साहित्य के निर्माता एवं पोषक, समाज सुधारक, विधवाओं एवं पतितों के रक्षक, शिक्षाविद, ब्रह्मचर्य आश्रम के प्रचारक, स्वदेशी के समर्थक, आदर्श संन्यासी, नेता, शुद्धि एवं हिन्दू संगठन के लिये अपने प्राणों की आहुति देने वाले 'स्वामी श्रद्धानन्द' जी महाराज के चरणों में सादर समर्पित करता हूँ।

—डॉ. विवेक आर्य

शुद्धिकरण के जन्मदाताः महर्षि दयानंद सरस्वती

'यदि कोई ब्राह्मण वा वैश्य या कोई अन्य जात-पात का व्यक्ति हिन्दुओं के धर्म में से हानि और लाभ को समझे बिना अथवा किसी मनुष्य के कहने-सुनने से मुसलमान या ईसाई हो जावे और उनके विवाह या मृत्यु आदि रीति-रिवाज में अथवा खानपान में कुछ दिन तक सम्मिलित रहा हो और इसके पश्चात् यदि वह व्यक्ति अपने अपराधों की क्षमा का प्रार्थी हो तो उसको अपनी जात (बिरादरी) में सम्मिलित कर लेना चाहिये या नहीं?

निःसंदेह, यदि वह अपने अपराधों की क्षमा का प्रार्थी हो तो समाज को चाहिये कि उसको अपनी बिरादरी (जात) में सम्मिलित कर लें।'

(महर्षि दयानन्द पत्र एवं विज्ञापन, भाग 2, पृ. 998)

स्वामी श्रद्धानन्द की अमर सूक्तियाँ

कांग्रेस के मंच से

अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के पद से आपने अपने भाषण में कहा था कि 'यदि जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो, तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बन कर अपनी सन्तान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचारी ब्रह्मचारी हों शिक्षक और कौमी हो शिक्षा पद्धति, तभी कौम की जरूरतों को पूरा करने वाले नौजवान निकलेंगे, नहीं तो इसी तरह आपकी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनी रहेंगी।'

दलितोद्धार

अपने इसी भाषण में आपने कहा था कि 'लन्दन नगर में भारत की रिफाम-स्कीम-कमेटी के सामने ईसाई-मुक्ति फौज के बूथ टकर साहब ने कहा था कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहियें और उसके लिये हेतु दिया था क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर हैं। इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिये और सोचिये कि किस प्रकार आपके साढ़े छः करोड़ भाई, आपके जिगर के टुकड़े, जिन्हें आपने काट कर फेंक दिया है, किस प्रकार भारत माता के साढ़े छः करोड़ पुत्र एक विदेशी गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर बनते हैं। मैं आप सब बहिनों और भाइयों से एक याचना करूँगा। इस पवित्र जातीय मन्दिर में बैठे हुये अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेमजल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि आज से वे साढ़े छः करोड़ हमारे लिये अछूत नहीं रहे, बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनकी पुत्रियों और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे। उनके गृहस्थ नर-नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे। हमारे स्वतन्त्रता प्राप्ति के युद्ध में वे हमारे कन्धे से कन्धा जोड़ेंगे और हम सब एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुये ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे। हे देवियो और सज्जन पुरुषो! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की दया से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।'

आर्यसमाज से आशा

कांग्रेस, हिन्दू महासभा और शुद्धि सभा से निराश होने के बाद आपने आर्यसमाज को लक्ष्य करते हुए लिखा कि 'हिन्दू-संगठन के लिए गत ढाई वर्ष काम करते हुए मैंने अनुभव किया कि यदि आर्य-संस्कृति की रक्षा और उसके द्वारा हिन्दू समाज को अध:पतन से बचाना है, तो आर्यसमाज को अपनी त्रुटियाँ दूर करके इस सेवा के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी। जब तक अपनी बिखरी हुई शक्तियों को केन्द्रित करके आर्यसमाज की संस्था लगन से इस काम में नहीं लग जाती, तब तक हिन्दू-समाज के अन्य सम्प्रदायों में भी जान नहीं पड़ सकती।'

श्रद्धानंद

नई दिल्ली, मार्ग शीर्ष कृष्णा 3

दानवीर श्री सेठ जुगलकिशोर बिड़ला जी का शुभ सन्देश

स्व. स्वामी श्रद्धानन्द जी और शुद्धि

श्रीयुत मंत्री जी,

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा, देहली।

नमस्ते, आपका पत्र मिला। शुद्धि के कार्य को स्वामी जी ने अपने जीवन का ध्येय बना लिया था। इसलिये इस कार्य को अधिकाधिक अग्रसर करते हुए अथक उद्योग करते रहना ही स्वामी जी महाराज के जीवन तथा बलिदान की सच्ची स्मृति होगी। खेद है कि हम लोगों को (विशेषतः आर्यसमाजी भाइयों को) जितना प्रयत्न इस कार्य को बढ़ाने में करना चाहिये अभी तक उतना नहीं हुआ है आशा है आप इस कार्य की ओर उत्साह तथा लगन पूर्वक ध्यान देंगे।

भवदीय—

जुगलकिशोर

[दानवीर सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला के उपर्युक्त विचार से हम पूर्णतया सहमत हैं और श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संचालित शुद्धि कार्य को उत्साह पूर्वक सफल बनाने और बढ़ाने का सबको अवश्य यत्न करना चाहिये]

Acharya Devvrat
Governor, Gujarat
Gandhinagar-382021

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल, गुजरात
गांधीनगर-३८२०२१

संदेश

स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, भारतरत्न महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी द्वारा 13 फरवरी, 1923 को स्थापित अत्यंत ओजस्वी संस्था भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के 100 वर्ष पूर्ण होने पर उसके गौरवमयी इतिहास को लेखनबद्ध किया जा रहा है । ऐसे स्वर्णिम अवसर इस प्रतापी संस्था का प्रमाणिक इतिहास हिंदी एवं अंग्रेजी में लिखा जाना नई पीढ़ी के ज्ञानवर्धन और भावी लेखकों, शोधार्थियों के लिए संदर्भ ग्रंथ का भी कार्य करेगा।

मैं शुद्धि सभा के गौरवमयी इतिहास को पुस्तकाकार प्रदान करने के लिए हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूं और आर्य जगत को विशेष रूप से इस गौरव ग्रंथ को पढ़ने की अपील करता हूं ताकि उन्हें अपने गौरवशाली अतीत का बोध हो सके।

(आचार्य देवव्रत)

भूमिका

आर्यसमाज और शुद्धि आंदोलन पुस्तक का लेखन 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर किया गया है। शुद्धि सभा की स्थापना 13 फरवरी 1923 को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की प्रेरणा से आगरा में हुई थी। अपने राजनीतिक जीवन से संन्यास लेने के पश्चात् स्वामी जी ने दलितोद्धार और शुद्धि के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया। आपने शुद्धि यज्ञ में अपना बलिदान देकर आर्यों को निर्भीक होकर शुद्धि यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए प्रेरित किया। शुद्धि यज्ञ में कई दर्जन कार्यकर्ताओं का बलिदान हुआ। सैकड़ों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक हानि उठानी पड़ी। स्वामी दयानन्द के सिपाहियों ने अनेकों कष्ट सहकर अनेक शताब्दियों से बिछुड़ चुके भाइयों को स्वधर्मी बनाया। यह प्रेरणा उन्हें वेदों के महान् विद्वान् एवं हिन्दू जाति रक्षक स्वामी दयानन्द से प्राप्त हुई। स्वामी जी ने एक कुशल चिकित्सक के समान दीर्घ काल तक संसार की श्रेष्ठतम आर्य (हिन्दू) जाति के पतन के कारणों का नजदीकी से विश्लेषण किया। इस पतन के निराकरण की अचूक औषधि को 'वेद विद्या' के पुनः प्रचार के रूप में बताया। 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देकर पुनरुद्धार का जनजागरण किया। रूढ़िवादी हिन्दू समाज ने शताब्दियों से विधर्मी हो चुके भाइयों की वापसी के हर दरवाजे बंद कर दिए थे। आपने आर्य जाति पर महान् उपकार करते हुए उन बंद पड़े दरवाजों को खोल कर शुद्धि विधान को पुनः प्रचलित किया। जिससे हिन्दुओं की घटती जनसंख्या पर रोक लगे। स्वामी जी से प्रेरणा पाकर आर्यसमाज ने अपने हाथों में लिया और लगभग आधी शताब्दी तक उसे विधर्मियों के साथ साथ अपने ही स्वधर्मी भाइयों का कटु विरोध सहन करना पड़ा। स्वामी दयानन्द के समर्पित सिपाही हँसते हँसते इस विरोध को सहते रहे और कर्तव्य पथ पर अडिग रहे।

इस पुस्तक में मैंने उन महान् आत्माओं के बलिदान, तप और त्याग की गाथा को संकलित करने का प्रयास किया है। एक शताब्दी से अधिक के कार्य एक पुस्तक में समेटना संभव ही नहीं है। यह सारी

सामग्री व्यवस्थित रूप से एक स्थान पर कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए इसका संकलन करना एक बड़ी चुनौती थी। इस पुस्तक को मैंने केवल 6 माह में लिखा है पर इसकी सामग्री का स्त्रोत्र मेरे जीवन के गत 25 वर्षों में किये गए हज़ारों पुस्तकों का स्वाध्याय है। मुझे यह लिखते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि यह पुस्तक मेरे स्वाध्याय रूपी यज्ञ का एक सुखद और संतोषजनक फल है। जिससे वर्तमान ही नहीं आने वाली पीढ़ियां भी प्रेरणा लेंगी। शुद्धि आंदोलन के इतिहास पर हिंदी में विशेष रूप से लिखी गई यह पहली व्यवस्थित पुस्तक है। इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा में शुद्धि सभा के मंत्री श्री सुभाष दुआ जी से मिली थी। आपने अपने प्रयासों से मुझे शुद्धि समाचार के दुर्लभ अंक उपलब्ध करवाए। समय समय पर आने वाली कठिनाइयों का निराकरण किया। आर्य जगत् के युवा शोधार्थी श्री प्रियांशु सेठ द्वारा किया गया पुरुषार्थ अवर्णनीय है। मैं उनका आभारी हूँ। श्री संजय कुमार, श्री अमित सिवाहा, श्री सहदेव शास्त्री, डॉ. नरेश कुमार धीमान्, डॉ. सुरेंदर कुमार आदि का मैं उनके सहयोग के लिए धन्यवादी हूँ। हिन्दू समाज इस पुस्तक से प्रेरणा लेकर शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाएं। यह हिन्दू जाति के अस्तित्व के लिए और आने वाली पीढ़ी के भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। शुद्धि से हिन्दू समाज के अस्तित्व को चुनौती देने वाली सभी समस्याओं का समाधान है जैसे गौ रक्षा, लव जिहाद, अवैध शरणार्थी, अल्पसंख्यक होता हिन्दू, यूनिफोर्म सिविल कोड, जनसंख्या नियंत्रण, आत्मनिर्भर और शक्तिशाली सरकार, धार्मिक स्वतंत्रता, ईसाई धर्मान्तरण, शरिया बनाम संविधान आदि। इसलिए हर हिन्दू को अपने जीवन में कम से कम पाँच व्यक्तियों को शुद्धि करने कराने का संकल्प लेना चाहिए। यही इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य है।

डॉ. विवेक आर्य, दिल्ली
कार्यकारिणी सदस्य, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

शुद्धि ने इतिहास रचा 'लहू' बहा तब धर्म बचा

ईश्वर एक है तो धर्म भी एकाधिक नहीं हो सकते। धर्म हिंदू, मुसलमान, ईसाई आदि ना होकर, धर्म केवल धर्म होता है, जो शाश्वत अर्थात सनातन होता है। ईश्वर हमें हिंदू मुसलमान या ईसाई आदि बनाकर नहीं बल्कि मनुष्य रूप में ही भेजता है। हम ही उसे स्वयं निर्मित मतों में मतांतरित करते हैं। सनातन ज्ञान अर्थात् वेद हमें 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनने का ही निर्देश करते हैं। शुद्धि पुनः मानव बनने की ही प्रक्रिया है। हम मनुष्य बनें, नोबेल या श्रेष्ठ मनुष्य बने-यही शुद्धि का संदेश है। शुद्धि मानवता के पथ पर आगे बढ़ने की ही प्रक्रिया है।

शुद्धि असत्य से सत्य की यात्रा है, अंधकार से उजाले की यात्रा है, अंधविश्वास से विज्ञान की यात्रा है, अधर्म या विधर्म से धर्म की यात्रा है, मानवता के मार्ग पर वापसी की यात्रा है, शुद्धि स्वैच्छिक निर्णय और आत्मा की आवाज सुनने की यात्रा है.... शुद्धि-शास्त्रार्थ का अवलंबन लेती है और सत्य धर्म की पक्षधर है जो सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनीन धर्म को ही बढ़ाती है.... मानवता के इसी मार्ग को प्रशस्त करने के उद्देश्य से ही 100 वर्ष पूर्व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने 13 फरवरी, 1923 को आगरा में भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की स्थापना की थी जो आज शत वर्ष के अंतराल में एक वट वृक्ष का स्वरूप धारण कर समस्त मानवता को शीतल छाया प्रदान करने का कार्य कर रहा है। महान् विभूतियां, राजाधिराज, गरिमा मंडित नेतृत्व, धर्म योद्धा, स्वैच्छिक कार्यकर्त्ता, ऐतिहासिक शुद्धियां-घटनाएं, उपलब्धियां स्वर्णाक्षरों में लिखी गौरव यात्रा का हिस्सा है। शुद्धि सभा को दर्जनों आर्यों ने अपने लहू से सिंचित कर इसे तेजस्विता, ओजस्विता दी। राइस बैग, लोभ-लालच, पेट्रो-डॉलर, तलवार या दबाव, छल-छद्म, दबाव, भय के साथ साथ अपनों के विरोध, बाधाओं का सामना करते हुए भी शुद्धि के द्वार खोल शुद्धि अर्थात् परावर्तन,

धर्म वापसी, घर वापसी के कार्य को विश्व व्यापी आंदोलन बना दिया। आर्यों ने अपनी मृत्यु का वरण कर मानवता को जीवन दिया। अपनी चिताओं की ज्वाला से शुद्धि आन्दोलन को ज्वलंत बनाए रखा। उनकी मृत्यु शुद्धि का जीवन बनी.... लाखों शुद्धियां हुई, करोड़ों को धर्मांतरित, राष्ट्रांतरित होने से बचाया, लव- जिहाद से लाखों बेटियों, बहिनों को सुरक्षित कर उन्हें जीवन दान दिया। राष्ट्र और धर्म की उसी गौरव गाथा को सुख्यात लेखक डॉ. विवेक आर्य जी ने व्यस्त रहते हुए भी अथक परिश्रम से पहली बार शुद्धि आन्दोलन के शतवर्षीय इतिहास लेखनीबद्ध कर भावी पीढ़ी पर बहुत बड़ा उपकार किया है। उन्होंने अनेकों संदर्भ ग्रंथों के संदर्भ रख इसे संदेहमुक्त प्रमाणिकता प्रदान की है।

यह ऐतिहासिक ग्रंथ भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की शताब्दी के अवसर पर शुद्धि के शहीदों की श्रृंखला, जिसके अंतर्गत कुछ का उल्लेख पुस्तक के एक अध्याय में भी किया गया है, उन ज्ञात-अज्ञात सभी प्रेरक, अमर हुतात्माओं को हमारी ओर से सादर विनम्र, अश्रुपूरित श्रद्धांजलि है। वही पुण्य आत्माएं शुद्धि के कार्य को अपने अप्रतिम त्याग, बलिदान से जहां आज हमारी प्रेरणा का पुंज बनी हैं वहीं वे पुनर्जन्म ले अपने वर्तमान जीवन में भी इस आंदोलन को नेतृत्व देती हैं.... संभवतः यह उन्हीं की आवाज है जो दिन रात हमारे तन मन में ऊर्जा का संचार करते हुए गूंजती रहती है,

"क्या हुआ जो श्रद्धानंद नहीं,
यह शुद्धि होगी बंद नहीं...."

यही पुस्तक अपने गौरवशाली इतिहास की पुस्तक होने के कारण शुद्धि सैनिकों, शुभचिंतकों का बल बनेगी, प्रेरणा बन शुद्धि के आंदोलन को गति देगी... युवागण इसे अपना ध्येय बनाएंगे-ऐसी आशा है क्योंकि शुद्धि ही लव-जिहाद, गौ-हत्या, सांप्रदायिकता, मतांतरण, राष्ट्रांतरण जैसी अनेकानेक समस्याओं का सटीक समाधान है।

भविष्य में लेखकों व शोधार्थियों, स्वाध्यायशील, सुधि पाठकों के लिए यह इतिहास ग्रंथ बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा-ऐसा अदम्य विश्वास है।

सुभाष दुआ
महामंत्री, भारतीय हिंदू शुद्धि सभा

विषय-सूची

विषय **पृ०सं०**

1

शुद्धि: भूमिका एवं आवश्यकता

"शुद्धि" शब्द प्राचीन शब्द है। जिसका अर्थ शुद्धता, शुचिता, पवित्रता, स्वच्छता, प्रायश्चित्त अथवा व्यक्ति या वस्तु को शुद्ध करने के संस्कार के रूप में प्रचलित है। प्राचीन काल में आचरण शुद्धि, व्यवहार शुद्धि, विचार शुद्धि अथवा कोई अनैतिक कार्य करने पर प्रायश्चित्त कर शुद्धि करने का विधान था। यही विधान अनार्य, दस्युओं आदि को नियमपूर्वक प्रायश्चित्त करने पर समाज में पुनः शामिल करने के प्रचलित रहा था। मध्य काल में शुद्धि के संस्कार के सामाजिक रूप में परिवर्तन हुआ। न केवल विदेशी आक्रांताओं को शुद्ध कर आर्य हिन्दू धर्म में शामिल किया गया अपितु जो हिन्दू बलात अथवा प्रलोभन अथवा अन्य किसी कारण से विधर्मी हो गए थे, उन्हें पुनः मुख्य समाज का अंग बनाने के लिए शुद्धि संस्कार के विधान का प्रयोग किया जाता था। उस समय हिन्दू समाज की पाचन शक्ति बहुत शक्तिशाली थी। हुण, शक, कुषाण, कम्बोज आदि जातियों को अपने में समाहित कर उन्हें सदा के लिए अपनी विचारधारा में शामिल कर लिया गया। मध्य काल में प्रचलित बुद्ध एवं जैन मत को भी हिन्दू समाज में समाहित कर लिया गया। महात्मा बुद्ध को तो हिन्दू धर्म के 24 अवतारों में गिना तक गया। परन्तु किंचित कारणों से मध्य काल में यह पाचन शक्ति कमजोर पड़ गई। इसलिए इस्लाम और ईसाइयत को हिन्दू समाज की मुख्य-धारा में शामिल नहीं किया जा सका। अपवाद रूप में समय समय पर अनेक प्रयास अवश्य हुए। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि हिन्दू समाज एक बंद पिंजरे के जैसा बन गया। जिससे बाहर तो जाया जा सकता था पर अंदर कोई वापिस नहीं आ सकता था। यही कारण था कि 8वीं शताब्दी में मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण के समय से लेकर 19वीं शताब्दी के मध्य हम आर्य हिन्दू राष्ट्र की सीमाओं को संकुचित होता ही देखते आ रहे हैं। अफगानिस्तान की सीमाओं से लेकर सुदूर बर्मा की सीमाओं तक फैला यह राष्ट्र अनेक प्रान्त, भिन्न

realpatidar.com

भिन्न भाषा, रहन-सहन, खान-पान आदि होते हुए भी अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति, अपनी परम्परा से एक राष्ट्र के रूप में संगठित और स्थापित रहता आया है। इसके संकुचित और पराधीन होने के कारणों में शुद्धि रूपी प्राचीन व्यवस्था को भूल जाना एक प्रमुख कारण कहा जायेगा। इस्लाम या ईसाइयत द्वारा अपने में शामिल करने की जो इच्छा शक्ति दिखती हैं, उतनी तीव्रता या प्रबलता हिन्दू समाज में आज नहीं दिखती हैं। हिन्दू समाज के कमजोर होने के मुख्य कारण बाहरी और आंतरिक दोनों थे। बाहरी कारणों में इस्लामिक काल में एक ओर गर्दन पर तलवार रखकर, भय से जबरन धर्म परिवर्तन करवाया जाता था। वहीं दूसरी ओर धन, स्त्री, ईनाम, पद आदि प्रलोभन देकर इस्लाम में शामिल होने का न्योता दिया जाता था। इसका शिकार ऊँच से लेकर निम्न कही जाने वाले सभी वर्गों के सदस्य बने। अंदरूनी कारणों की अगर समीक्षा करें तो ईसाई मत का मुख्य निशाना निम्न समाज के लोग बने। छुआछूत रूपी भेदभाव के शिकार बने लोगों को ईसाई बनने में सामाजिक मान्यता, आर्थिक लाभ, शिक्षा, विवाह, नौकरी आदि सुविधा दी गई। जिसके परिणाम स्वरुप दक्षिण भारत और उत्तर पूर्व में बड़ी संख्या में धर्म परिवर्तन ईसाई मत में हुआ। मौलवियों और पादरियों की आक्रामक रणनीति के समक्ष हिन्दू समाज बेबस दिख रहा था। इन सब कारणों के अतिरिक्त स्थिति को और अधिक विकट बनाने का कार्य हमारे ही लोगों ने किया। विधर्मी हो चुके अपने स्वजनों के वापिस आने की तीव्र इच्छा होते हुए भी उनकी वापसी का कोई विकल्प हमने नहीं दिया। अगर कोई भूल वश विधर्मी हो भी जाता था, तो उसे हमारे यहाँ से जो एक बार के लिए गया, सदा के लिए गया कहकर दुत्कार दिया जाता था। पराधीन शासन, उचित मार्गदर्शक की कमी, गरीबी, प्राकृतिक आपदाएं, युद्ध पर युद्ध, सामाजिक भेदभाव, अज्ञानता के ऐसे परिवेश में ऐसा प्रतीत होता था कि भारत भूमि कभी इस दासता रूपी अन्धकार से मुक्त हो ही नहीं पायेगी। भक्ति काल के संतों ने पीड़ित हिन्दू जाति के घावों पर मरहम लगाने का कार्य अवश्य किया पर यह रोग ऐसे का ऐसा बना रहा। धार्मिक अन्धविश्वास, सती प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, भ्रूणहत्या, पशुबलि, विधवा का पुनर्विवाह न होना और सबसे बढ़कर छुआछूत से ग्रसित हिन्दू जाति पतन की ओर बढ़ती जा रही थी। हिन्दुओं में छुआछूत का भेदभाव और परस्पर खान-पान से परहेज एक विकराल समस्या बन गया था। कुछ उदाहरण लीजिये—

श्री राम शर्मा लिखते हैं कि बम्बई में एक युवा शेषाद्रि अपने भाई जो अवयस्क परिवर्तित ईसाई था के पास एक-दो दिन के लिए रुक गया तो उसे हिन्दू धर्म की तिलांजलि देनी पड़ी क्योंकि वह पतित हो गया था। बाल गंगाधर तिलक एवं महादेव गोविन्द रानाडे महोदय का भी हिन्दू समाज से बहिष्कार लगभग हो ही गया था। जब उन्होंने एक मिशनरी विद्यालय की प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण में भाग लिया था। उन्हें जो चाय दी गई थी, उन्होंने उस चाय के कप को छुआ तक नहीं था। फिर भी प्रायश्चित्त करने पर ही उनकी घर वापसी हुई थी।[1] पाठक विचार करें तत्कालीन समाज के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था। तो अन्य सामान्य जनों के साथ कैसा किया जाता होगा?

ऐसे अवनति के काल में भारतीय धरा पर महान समाज सुधारक महर्षि देव दयानन्द का आगमन हुआ। आपने दीर्घकाल तक सूक्ष्मता से विश्लेषण कर यह निष्कर्ष निकाला कि हमारे महान आर्यवर्त देश के आदि काल से विश्व गुरु होने का मुख्य कारण यहाँ पर प्रचलित वैदिक धर्म था। महाभारत काल में पतन का दौर आरम्भ हुआ और यह व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई। यही हमारे पराभव का कारण बना। महान आर्य जाति की दुर्दशा को देखकर उसकी पीड़ा को दूर करने के लिए महान दयानन्द ने वेद रूपी औषधि से उसका उपचार करना आरम्भ कर दिया। छुआछूत के विरुद्ध अपने भीष्म आवाहन के साथ 'वेदों की ओर लौटो' का सन्देश आपने दिया। आधुनिक भारत में स्वामी दयानन्द जी को 'शुद्धि' रूपी प्राचीन व्यवस्था को पुनः प्रचलित करने का श्रेय जाता है। हम शुद्धि व्यवस्था को सदियों पहले विस्मृत कर चुके थे। दयानन्द स्वामी जी की कृपा से पुनः यह जागरण हुआ। स्वामी जी ने देखा कि महान् आर्य जाति की दुर्गति उसकी पराये हो चुके स्वजनों को वापिस से न अपनाने के संकीर्ण भाव से हो रही थी। इसलिए उन्होंने प्राचीन शास्त्रों के उदाहरण प्रस्तुत कर शुद्धि के विधान की पुनः स्थापना की। स्वामी जी के समक्ष शुद्धि विषय सर्वप्रथम 1877 में उनके पंजाब प्रवास के समय उपस्थित हुआ था। पंजाब प्रवास के छः महीने पश्चात् उन्होंने एक परिवर्तित ईसाई हो चुके हिन्दू को पुनः शुद्ध किया था।[2] पादरी खड़क सिंह जिसे रोबर्ट क्लार्क ने ईसाई बनाया था उसे स्वामी जी ने वार्तालाप करके पुनः हिन्दू बनाया गया। खड़क सिंह ने अपनी दो पुत्रियों का विवाह भी आर्य परिवारों में किया। उन्होंने

परिवर्तित अनेक ईसाइयों को पुनः शुद्ध किया था।[3] लुधियाना में ईसाई मिशन स्कूल में पढ़ाने वाले श्री रामशरण ने स्वामी जी से वार्तालाप के पश्चात् ईसाई बनने के विचार को त्याग दिया था।[4] 1879 में स्वामी दयानन्द ने एक जन्मजात मुसलमान मुहम्मद उमर की शुद्धि कर उन्हें अलखधारी नाम दिया था।[5] अमृतसर में स्थानीय ईसाई स्कूल के 40 हिन्दू छात्रों ने स्वामी जी के भाषण सुनकर ईसाई बनने के विचार को त्याग दिया था। स्वामी जी के जीवन काल में शुद्धि के कुछ ही उदाहरण मिलते हैं। स्वामी जी के अकस्मात निधन के कारण यह मिशन अधूरा रह गया। परन्तु यह एक भविष्य में आरम्भ होने वाले अभियान की शुरुआत थी। आधुनिक समाज में पानी के बहाव के विरुद्ध शुद्धि रूपी भगीरथ प्रयास को शुभ आरम्भ करने का श्रेय निस्संदेह स्वामी दयानन्द को जाता है। आरम्भ में यह परिवर्तित हुए हिन्दुओं तक सीमित रहा। कालांतर में जिन हिन्दुओं के पूर्वज कभी मत परिवर्तन किये थे, उन्हें सम्मिलित किया गया। पश्चात् जिनके पूर्वज कभी हिन्दू नहीं थे, उनकी शुद्धि भी आरम्भ हो गई। इस प्रकार से कभी अपनी संख्या बढ़ाने की न सोचने वाले हिंदू समाज में एक महान् जाग्रति उत्पन्न हुई। **स्वामी दयानंद के कारण हमेशा खोने वालों ने प्राप्त करना शुरू कर दिया। जिसकी न उसे आदत थी और उसे वो बहुत काल पहले भूल भी चूका था।** आगे चलकर हम शुद्धि के सामाजिक प्रभाव पर चर्चा करेंगे।

पाद टिप्पणियाँ

1. आर. के. घई, शुद्धि मूवमेंट इन इंडिया, कॉमन वेल्थ पब्लिशर्स, दिल्ली, 2019, पृ. 35-36
2. पं. लेखराम, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 2000
3. हरबिलास शारदा, लाइफ ऑफ़ दयानन्द सरस्वती, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1946
4. सत्यकेतु विद्यालंकार, आर्यसमाज का इतिहास, दिल्ली, भाग 1, पृ. 617
5. वही, पृ. 619

15

शुद्धि आंदोलन और गुजरात

गुजरात में शुद्धि आंदोलन के कार्य को जन्म देने का श्रेय मास्टर आत्माराम अमृतसरी को जाता है। हिन्दू बहुल गुजरात में ईसाई और मुसलमान दोनों सक्रिय थे।

गुजरात में मतांतरण का इतिहास

1875 के भयंकर अकाल के पश्चात् गुजरात में ईसाइयों के पाँव जम गए। सेर सेर आटा देकर ईसाइयों ने लाखों चोटियां काट लीं। सरकार के सहयोग से सस्ती भूमि प्राप्त कर अपने केंद्र प्रमुख स्थानों पर बना लिये जैसे मुक्तिफौज, एलायेन्स मिशन, मेथोडिस्ट मिशन, रोमन कैथोलिक, चर्च मिशनरी सोसाइटी, प्रेस्बिटेरियन मिशन आदि। इन मिशन ने गोधरा, नडियाद, बोरसद आदि जिलों में अनेकों स्कूल चलाये। इनके अनेक प्रचारक मसीह का सन्देश देने लगे। इनका कार्य मुख्य रूप से अछूतों में चलता था। ईसाई लोग दवाखाना, अनाथ आश्रम इत्यादि का सेवा कार्य करते हुए धर्मान्तरण का कार्य करते हैं।[1]

ईसाइयों की सफलता देखकर सर आगा खान मैदान में उतरे। उनके खोजा भक्तों ने उन्हें कल्कि का दशम अवतार बना हिन्दू अछूतों को मूँड़ना आरम्भ किया। आगाखानी प्रचारकों की ओर से 'अल्लोपनिषद, निष्कलंक, भजन संग्रह, संत वाणी, दशावतार व्याख्यान, पांडवों का मत' आदि पुस्तकें रची गई। जिसके द्वारा 'अली' को कल्कि अवतार कह आगा खान उनके 48वें वंशज होने के कारण वर्तमान दशावतार हैं। इस जाल में पैसे का लालच देकर सैकड़ों हिन्दुओं को फसाया गया और निष्कलंक मंडलों (जमात खानों) की रचना हुई।[2]

इसके अतिरिक्त ख्वाजा हसन निज़ामी के चेले अहमदाबाद में खूब बने हैं। जहाँ ये 'निज़ामी' 'दीन' वगैरह पत्र निकाल 'दाइये इस्लाम' के हथकंडों का खूब प्रचार करते हैं। सूरत, रांदेर आदि के धनी मुसलमान जो अफ्रीका, रंगून से खूब धन कमा कर लाते हैं। तब्लीग

में खूब पैसा देते हैं। इनकी ओर से आर्यसमाज के विरुद्ध खूब साहित्य छपता है।[3]

नवसारी, अहमदाबाद आदि स्थानों पर इमाम शाह का चलाया हुआ 400 वर्ष पुराना सतपंथ सक्रिय है। इसकी प्रचार पद्धति वही आगा खानी है अर्थात हिन्दू का रूप धारण कर मुसलमान बनाना उसका उद्देश्य है। इस समय इसके प्रभाव में 3-4 लाख हिन्दू हैं। गुजरात में शुद्धि कार्य का प्रारम्भ महाराजा सियाजीराव गायकवाड़ बरोड़ा नरेश द्वारा दलित भाइयों के उत्थान के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ। आपने मास्टर आत्माराम जी को अमृतसर से बुलाकर दलितों के लिए पाठशालाएं और बोर्डिंग हाउस खुलवाए। जिनमें हज़ारों दलित बच्चे शिक्षा के साथ साथ वेद मंत्र पढ़ने, यज्ञ, संध्या और गायत्री जाप करना सीखते हैं।[4]

गुजरात में मोटा मियां के नाम से एक मुस्लिम पीर थे। वह गौ सेवा के नाम पर भीलों को इस्लाम में पिछले दरवाजे से दाखिल करवाते थे। शुद्धि समाचार में इस विषयक एक सूचना इस प्रकार से प्रकाशित हुई थी:

'मोटा मियां' की हरकतें

चार लाख भीलों को मुसलमान बनाने की चेष्टा।

गुजरात में पीर मोटा मियाँ नामक एक व्यक्ति है। आप ग्रैजुएट हैं अनेक स्थानों में सरकारी नौकरियों पर रह चुके हैं। बड़ौदा राज्य में पुलिस विभाग में भी कार्य कर चुके हैं। इस समय आप मंगलौर (बड़ौदा राज्य) की गद्दी के पीर हैं। आप के हज़ारों हिन्दू मुस्लमान भक्त हैं। हिन्दुओं पर आपने गौ के नाम से मोहनी डाल रक्खी है। आप घर-घर में 'गो पालो' इस मंत्र के प्रचारक हैं। आप का दावा है कि आपने एक लाख गायें लोगों से रखवाई है। आपकी गो भक्ति की बातें सुनकर हमारे हिन्दू भाई इज्जत देते हैं........ यह मोटा मियाँ उपरोक्त चाल बाजी से राजपीपला स्टेट के चार लाख भीलों को एक ही ग्रास में हड़प लेना चाहता है। आपकी ओर से भील ग्रामों में फ़कीर पहुंच चुके हैं और वहीं कबरें बनवा (पीर की क़बर) के नाम से भीलों से उनकी पूजा आरम्भ करवाई है। भीलों को डोरा, ताबीज़, गंडा देकर मुसलमान बनने का उपदेश दिया जाता है। कंठी मुहमदी तथा भूत प्रेत भगाने के लिये क़लमा का जाप सिखाया जा रहा है। इन फ़कीरों को हिन्दुओं से हिलमिल कर रहने का उपदेश है। पर मुंह में राम बग़ल

में छुरी की पद्धति से यह इस्लाम का प्रचार करेंगे। (स्वतंत्र)

'खेद है यह सब होते हुए भी गुजरात के हिन्दू मोटा मियां को गोपालक मान बड़े चाव से अपनाये हुए हैं।'[5]

चांदकरण शारदा इसी विषय में लिखते हैं:

'इसके उपरांत 'मोटा मियां' एक इस्लामी फकीर है। उनका काम है हिन्दू मुसलमानों को मुरीद करना। यह घर घर गाय पालों के मन्त्र के प्रचारक बन गए। उनकी गौभक्ति के कारण हिन्दू उन्हें पूज्य समझने लगे। वह भी भीलों को मुसलमान बनाने में सिरतोड़ मेहनत करते रहते हैं। इनके कारण कई शील ठाकुर मुसलमान हो चुके हैं। इन्होंने 'तरकीबे तालीमे तौहीद' के नाम से एक पुस्तक लिखी है और हिन्दुओं की कब्रपरस्ती का पूरा लाभ उठाने की योजना है।'[6]

गुजरात में शुद्धि कार्य का प्रारम्भ

आगा खानी संप्रदाय द्वारा अछूतों को भ्रष्ट करने पर आत्माराम जी और भारतीय शुद्धि सभा के परामर्श से आनंदप्रिय जी ने गुजरात में शुद्धि सभा की स्थापना की। थोड़े ही समय में सैकड़ों आगाखानियों को शुद्ध किया गया। इसके पश्चात् इस कार्य को बृहत रूप देने के लिए मुंबई प्रदेश हिन्दू सभा की स्थापना की गई। सेठ जुगल किशोर बिरला ने इस कार्य में आर्थिक सहयोग दिया। सभा व्यवस्थित होने के पश्चात् आनंद, अंकलेश्वर, अहमदाबाद, बरोड़ा, नड़ियाद आदि केंद्रों की स्थापना हुई। सभा को राजा बहादुर नारायण सिंह जी की कृपा से 20 प्रारंभिक पाठशालाएं स्थापित की गई। इसके उपरांत हिन्दू धर्म पत्रिका, प्रचारक, मार्तण्ड, सुधारक, भील क्षत्रीय, चारया क्षत्रिय, आर्य गर्जना आदि पत्र बरोड़ा से हिन्दू सभा बरोड़ा के कार्यकर्ता आनंद प्रिय जी के निरीक्षण में निकले।[7]

इन का विषय भील आदि को क्षत्रिय सिद्ध कर हिन्दू समाज का अभिन्न अंग बताना, हिन्दुओं पर विधर्मियो द्वारा किये गए अत्याचारों को वर्णित करना। शुद्धि और हिन्दू संगठन की आवश्यकता और परिचय देना था। (लेखक)

इन प्रयासों से ईसाई, मुसलमान, खोजा, पिराणा, मौलेसलाम इत्यादि कुल दस हजार की शुद्धि बरोड़ा सभा की ओर से हो चुकी है। शुद्धि सभा के प्रयास से गुजरात में स्थान स्थान पर लाठी पटा आदि सीखने के अखाड़े स्थापित हुए जिसमें प्रो. माणिकराव जी का सहयोग मिला।[8]

गुजरात में मुसलमानों की पचासों रियासतें हैं। ये वीर धनी क्षत्रिय है जो महमूद बेगड़ा के काल में बिटलाये (पथ भ्रष्ट हो) गये थे। हिन्दू जाति के अविद्या और अन्धकार के कारण पुनः शुद्ध कर में सम्मिलित नहीं किये गये। हसन निजामी ने और पीर मोटामियां ने इनको कट्टर मुसलमान बनाने का प्रयत्न आरम्भ किया और इनके हिन्दू नाम जैसे बलवन्त सिंह राठौड़, नाहर सिंह इत्यादि को बदलकर मुसलमानी नसीरउल्लाह खान इत्यादि रखने लगे। चांदकरण शारदा और आनंदप्रिय जी के प्रयासों से तीन मुसलमान रियासतों के अधिपति पुनादरा दरबार, दावा और अमोस हिन्दू धर्म में सम्मिलित हो गये। राजपूत महासभा ने उनको मिला लिया। राजकोट के प्रिंसेस कॉलेज में इनके राजकुमार बाकि हिन्दू राजकुमारों के साथ ही सहभोज करते हैं। पोलिटिकल रीजेंट दफ्तर के अनुसार इनकी गिनती अब हिन्दू राजाओं में ही होती है। पुनादरा दरबार के श्रीमान ठाकुर शिवसिंह जी इतने उत्साही और शुद्ध हिन्दू बन गए है कि वे स्वयं पधारकर मुसलमानों को शुद्ध कर रहे है।[9]

गुजरात प्रदेश में शुद्धि और हिन्दू संगठन का कार्य जमीनी स्तर पर चलाया गया। इसका श्रेय बहुत कुछ मास्टर आत्माराम अमृतसरी, आनंद प्रिय जी आदि को जाता है।

आगा खानी सम्प्रदाय की उत्पत्ति

शिया मुस्लिम समाज के अंतर्गत खोजा के नाम से मुसलमान अविभाजित भारत के गुजरात, महाराष्ट्र, सिंध, राजस्थान, पंजाब आदि प्रांतों में पाए जाते थे। आप इस्माइल मुसलमान के नाम से भी जाने जाते थे। कालांतर में यह सम्प्रदाय खाड़ी देशों और अफ्रीका महाद्वीप में मुख्यतः व्यापारियों के माध्यम से फैल गया। इसी संप्रदाय में आगा खान के नाम से 49 वें इमाम हुए। इनके बाद यह संप्रदाय आगा खानी के नाम से भी जाना जाने लगा। इसे खोजा भी कहा जाता है। पाकिस्तान के जनक और लाखों निरपराध हिन्दुओं की हत्या दोषी मुहम्मद अली जिन्ना का जन्म भी इसी खोजा संप्रदाय में हुआ था। 'खोजा' शब्द फारसी ख्वाजा शब्द से बना है।

13वीं सदी में पीर सदरुद्दीन ने गुजरात के हिन्दू लोहाणा, सुमरा, भाटिया, कुनबी, रबारी आदि को मुसलमान बनाने के नाम से इसी संप्रदाय की शाखा की स्थापना की थी। सतपंथ संप्रदाय, अर्धदग्ध मुस्लिम मत है और इसका केन्द्र पीराणा (अहमदाबाद के पास) स्थित

शमसी मत का प्रसार

हिन्दुस्थान की तरह अन्य देशों में भी इस मत का आज प्रसार हो रहा है। पेशावर, अटक, झेलम, सियालकोट, मुलतान, डेरा गाजीखां, सिन्ध इन प्रान्तों में इस मत का विशेषतः प्रसार है। परदेश में गये हुए हिन्दुओं के साथ यह मत स्वीडन, इजिप्ट, हंगरी, हांगकांग, चीन इत्यादि देशों में भी प्रसारित हुआ है। दूसरे देशों में इस मत में हिंदू मुसलमानों में जो भी परिमाण हो पर कम से कम पंजाब में 'एक हजार हिन्दुओं के साथ एक मुसलमान' है। हिंदुओं में कुछ ब्राह्मण में क्षत्रियों के सिवाय शेष सुनार, तांबट, कहार इत्यादि जाति के लोग इस मत में सम्मिलित हैं।

कुछ दिन पहिले जब सर आगा खां मुसलमानी विश्व विद्यालय के चन्दा उगाने के लिये पंजाब में दौरा कर रहे थे, उस समय उनके दर्शन से पुनीत होने के लिये लाहौर में दो हजार से अधिक हिन्दू ही एकत्रित हुए थे। ये हिंदू दूर-दूर के ग्रामों से दर्शनार्थ आये थे, परन्तु आश्चर्य की यही बात है कि इन एकत्रित लोगों में एक भी मुसलमान नहीं। तात्पर्य यही कि पंजाब में सर आगा खां को अवतार मानने वालों में हिंदू ही अधिक है, मुसलमान नहीं। श्री राधाकिशनजी ने 3 मार्च 1911 के 'हिंदुस्तान' नामक समाचार पत्र में प्रकाशित कराया था कि पंजाब में 25000 हिंदू शमसी मतानुयायी हैं और मुसलमानों के घराने तो अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं।

आचार्य की आमदनी

सर आगा खां इस मत में 'विष्णु के अवतार' की तरह माने जाते हैं। सच्चे मुसलमानी धर्म के अनुसार इस प्रकार अवतार मानना अनुचित तथा कुरान विरुद्ध होने से कुरान अभिमानी कट्टर मुसलमान सर आगा खां को धार्मिक दृष्टि से आदरणीय नहीं समझते। फलतः कट्टर मुसलमानों की ओर से गणना योग्य इन्हें कोई आमदनी नहीं होती है। कम से कम पंजाबी हिंदुओं की ओर से प्रतिवर्ष लाखों रुपया सर आगा खां के घर में पहुँचता है। आमदनी के निम्नलिखित उपाय हैं:

(1) **दर्शन**—सर आगा खाँ के दर्शन मात्र के लिये भी यथा शक्ति शुल्क देना पड़ता है। शुल्क के कमी वेशी दान के अनुसार कमोबेश पुण्य प्राप्त हुआ करता है, यह सर साहब के शिष्यों की धारणा है। दर्शनार्थ साधारणतः 5) या 7) रुपये शुल्क है।

(2) **बोला-प-दस्त** (हस्त चुम्बन)—सर साहब के हस्त चुम्बन के लिये 15) रुपये शुल्क देना पड़ता।

(3) **कंगना**—सर साहब अपनी आस्तीनों को ऊपर उठाते हैं और भोले भावुक शिष्य उन खुले हाथों पर अपने हाथ घुमाते हैं। इस विधि को कंगना कहते हैं। और इस प्रकार हस्त स्पर्श करने के लिये 7) रुपये शुल्क देना पड़ता है!

(4) **छटा** (प्रोक्षण)—सर आगा खां पानी में अपनी अंगुलियों को डुबोकर अपने शिष्यों के मुखों पर पानी छिड़का करते हैं। इस विधि को 'छटा' कहते हैं। इसका शुल्क 5) रुपये है।

(5) **बड़ी रीत** (प्रधान पद्धति)—उपरिलिखित चार पद्धतियों में सर आगा खां को बोलने का कष्ट नहीं हुआ करता है। बिना बोले ही काम चल जाया करता है। इस 'बड़ी रीति' नामक प्रधान विधि से आगा खां को उपदेश देना पड़ता है। यह उपदेश एकदम गुप्त हुआ करता है। सर आगा खां जो कुछ भी कहा करते हैं, उसका अनुवाद लोगों को सुनाया जाता है। यथा—''ईश्वर परमात्म'' आगा खां आप लोगों पर बहुत खुश हैं। इसी तरह धनी सलामत प्रेम और मुहब्बत में मग्न रहो। इतने वाक्यों को सुनने के लिये 75) शुल्क देना पड़ता है। जो मनुष्य एकमुष्ट 75) न दे सके उसे प्रथम 15) देकर शेष रकम 2) रुपये प्रति मास के हिसाब से चुकता करने के लिये सुविधा किया गया है।

आचार्य की वार्षिक आमदनी

शिष्यों की आमदनी में से अष्ट अंश या दशमांश भाग सर आगा खां को प्राप्त हुवा करता है। जिनकी सौ रुपया वार्षिक आय है, उन्हें 10 रुपये या 12 रुपये प्रतिवर्ष देना ही पड़ता है। उपरोल्लिखित उपायों के सिवाय यह वार्षिक आय बिना किसी झंझट के सर साहब के हाथों में पहुँच जाय। इसलिये ग्राम-ग्राम में प्रबन्ध किया गया है। जिस ग्राम में शमसी मतानुयायी लोग रहा करते हैं, वहां एक सार्वजनिक गृह हुआ करता है। इस सार्वजनिक गृह में लोहे की एक संदूक रक्खी रहती है। उस ग्राम में सर साहब को काम करने वाले दो पुरुष नियुक्त रहते हैं। उन्हें (1) मुखिया (अध्यक्ष) तथा [2] कामटी [कार्यवाह अर्थात् मन्त्री] कहा जाता है। उस सन्दूक की दो चाबियां हुआ करती हैं। यह दोनों चाबियां मुखिया और कामटी के सिपुर्द रहती हैं। शिष्य वर्ग प्रतिमास अपनी आय का दशमांश य अन्य किसी प्रकार का दान इस संदूक में

छोड़ा करते हैं। यह संदूक प्रतिमास खोली जाती है और उसमें जो कुछ आय निकलती है, वह सर साहब के पास पहुँचायी जाती है।

शोक है कि आज भी हजारों हिन्दू इस नीच दासता में फंसकर जहां अपने धन मन को गवा रहे हैं वहां अपनी ईश्वर प्रदत्त धर्म संभूति का भी सत्यानाश करते नहीं सोचते हैं। आशा है विचारशील भाई इस गोरखधन्धे से निकलने का प्रयत्न करेंगे और अपने पवित्र धर्म की रक्षा में तत्पर होंगे।[11]

आर्यसमाज की चुनौती

'आर्यसमाज के प्रचार की लहर पंजाब हुए सिंध से लेकर गुजरात में भी फैल गई। आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने देखा कि खोजा संप्रदाय हिन्दुओं को भ्रमित कर मुसलमान बना रहा है। तो उन्होंने इनके दुष्प्रचार को रोकने के प्रयास आरम्भ कर दिए। इस विषय में राष्ट्रीय अभिलेखागार में निम्नलिखित जानकारी मिलती है—

'आगा खान का पंजाब में अप्रैल 1911 में दौरा हुआ। इस दौरे पर उनकी जनसभाओं में भारी भीड़ उमड़ी। इस भीड़ में भाग लेने वाले आगा खानियों को शम्शी कहा जाता था। ये हिन्दू नाम से रहते थे और खोजा विचारधारा के अनुसार धार्मिक मान्यता रखते थे। इस भीड़ में सवर्ण और अछूत सभी हिन्दू थे। राष्ट्रीय अभिलेखागार की रिपोर्ट के अनुसार आर्यसमाज हिन्दुओं को बड़ी संख्या में शमशी बनते देख जागरूक हुआ। आर्यसमाज ने शमशी बने हिन्दुओं की शुद्धि कार्य को प्रारम्भ कर दिया। आर्यसमाज के शुद्धि कार्य का प्रेस में भी चर्चे हुए। इसमें लाहौर के हिंदुस्तान अख़बार में सम्बंधित जानकारी प्रकाशित हुई। पेशावर में आर्यसमाज ने 22 मई 1911 को अमीर चंद और फ़क़ीर चंद के नाम से दो शमशी मुसलमानों को शुद्ध किया।'[12]

राष्ट्रीय अभिलेखागार के अनुसार आर्यसमाज के शुद्धि प्रचार से आक्रोशित होकर आगा खानियों के वजीर ने उनकी ओर से भारत के वायसराय को शिकायत कर दी। उन्होंने प्रेस के माध्यम से आर्यसमाजियों द्वारा आगा खान पर आक्षेप करने का आरोप लगाया। उन्होंने प्रेस एक्ट के तहत आर्य समाजियों पर कार्यवाही करने के लिए सरकार से शिकायत की थी।[13]

एक ओर आगा खानी सम्प्रदाय हिन्दुओं को मुसलमान बनाता था दूसरी ओर आर्यसमाज उनकी शुद्धि कर उन्हें वापिस से हिन्दू धर्म

में प्रविष्ट करने के लिए तत्पर था। पूर्व में हिन्दुओं के खेत की खेती कोई भी काट ले जाता था। यह स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का प्रताप था जो उन्हें पहली बार चुनौती मिलने लगी थी। यह संघर्ष आगे की ओर बढ़ा। इस विषय में खोजा इस्माइली की वेबसाइट[14] पर दी गई जानकारी के आधार पर निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई है—

इस सम्प्रदाय को चुनौती देने वालों में सबसे प्रमुख नाम पं. राधा कृष्ण का था। आप आर्यसमाज के प्रधान थे। आप कभी स्वयं खोजा इस्माइली थे और कैम्बलपुर, रावलपिंडी के रहने वाले थे। 1913 में आपने अंग्रेजी और गुजराती में इस्माइलियों से 25 प्रश्न विषय पर पुस्तक लिखकर प्रकाशित की जो अत्यंत प्रसिद्ध हुई।

आपने बम्बई 1919 में आगा खानी संप्रदाय पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की थी। जिसका शीर्षक था 'आगा खान और उसके करिश्में।' इस्माइली प्रचारक करम हुसैन ने इसके प्रतिउत्तर में आगा खानी खुदाई नो जरकत के नाम से पुस्तक प्रकाशित की थी। पं. जी पर चारों ओर से प्रहार होने लगे जिसके वो प्रतिउत्तर देते थे। उन्हें शांति भंग करने का आरोप लगाकर जेल भेज दिया गया। वहां उनकी मृत्यु 1921 में हो गई। उनकी मृत्यु को खोजा मुसलमानों ने खुदाई चमत्कार के समान घोषित करने का प्रयास किया।

ऐसे ही साहित्य के माध्यम से आगा खान के विचारों की तार्किक समीक्षा करने में पं. केशराम जी का नाम सबसे आगे है। 2 जनवरी 1917 को आर्यसमाज के शिष्ट मंडल ने महात्मा गाँधी को आगा खान द्वारा हिन्दुओं को मुसलमांन बनाने के षड़यंत्र से अवगत करवाया। गाँधी जी कुछ परिवर्तित हुए हिन्दुओं को समझाने का प्रयास किया पर उन्हें सफलता नहीं मिली। आर्यसमाज ने अन्य कुछ पुस्तकें भी आगा खानी पर लिखी जैसे आगा खान गुप्त पंथ, दम फरेब, धूल की पोल आदि। इनके प्रतिउत्तर में आगा खानीयों ने भी पुस्तकें प्रकाशित की थीं जैसे इब्राहिम जुसब वरतेजी ने सूरत के पं. रामचंद्र जी की पुस्तक के प्रतिउत्तर में 'इस्लामिक चाबुक', पं. राधाकिशन जी की पुस्तक के प्रतिउत्तर में आफताब-ए-हकीकत, आर्य प्रकाश के प्रतिउत्तर में आर्य प्रकाश नी उधताई, खुली चिट्ठी नू भोपरु, आर्यसमाजी पंडितों नु पुकार आदि गुजराती में प्रकाशित की थी।'

आर्यसमाज के शीर्ष संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने इस्माइल मुसलमानों के द्वारा आरम्भिक काल में सत्ता हथियाने के लिए की गई राजनीतिक

हत्याओं, षड्यंत्रों, अपराधों को दर्शाने वाली जोसफ वोन हैमर की पुस्तक 'द हिस्ट्री ऑफ़ द असैसियन्स' को 1926 में प्रकाशित किया था। यह पुस्तक सन् 1090 से 1275 के मध्य निज़ारी इस्माइली मुसलमानों द्वारा मुस्लिम और ईसाई नेताओं के द्वारा किये गए अपराधों की प्रामाणिक जानकारी देती है।

पं. चमूपति जी के अफ्रीका के दौरे के समय पानी के जहाज पर उनका एक खोजा मुस्लिम से वार्तालाप और बाद में अफ्रीका में भेंट का प्रसंग भी मिलता है। पं. जी इस संप्रदाय की मान्यताओं का सूक्ष्मता से अध्ययन कर इस पर वैदिक मैगज़ीन में दो कड़ियों में लेख भी लिखे थे।

इस प्रकार से गुजरात और पंजाब में हमें आगा खानी संप्रदाय के कार्यों पर आर्यसमाज ने अंकुश लगाया था।

वर्तमान में भी गुजरात के परिश्रमी पटेल/पाटीदार समुदाय के लोगों ने सतपंथ सम्प्रदाय के बारे में अधिक आधिकारिक जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए बृहद-कार्य ग्रंथ ''सतपंथ छोड़ो'' (गुजराती भाषा) में लिखा है। यह इंटरनेट पर उपलब्ध है। उसे सबको पढ़ना चाहिए और सत्य को ग्रहण कर असत्य का त्याग करना चाहिए।

पाद टिप्पणियाँ

1. चांदकरण शारदा, शुद्धि चंद्रोदय, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, 1984 (सं), पृ. 247-248
2. वही, पृ. 248
3. वही, पृ. 259
4. वही
5. मई 1925, पृ. 25
6. शुद्धि चंद्रोदय, पृ. 248-249
7. वही
8. वही, पृ. 261
9. वही, पृ. 261-262
10. द कल्ट ऑफ़ आगा खान, भाग 2, द वैदिक मैगज़ीन, गुरुदत्त भवन, लाहौर, मई 1926, पृ. 111-123
11. अगस्त 1928, 430-432
12. होम पोलिटिकल 1911 जून
13. मेमोरियल फ्रॉम सर्टेन हिन्दुस् ऑफ़ द पंजाब कम्प्लेनिंग ऑफ़ द डेफामटोरी एंड लिबेलौस लैंग्वेज अडॉप्टेड बाय आर्यसमाजिस्ट टुवर्ड्स सर सुल्तान मुहम्मद शाह आगा खान, होम पोलिटिकल, मई 1911
14. heritage.isma-ili.net

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर.के. घई, शुद्धि मूवमेंट इन इंडिया, कॉमन वेल्थ पब्लिशर्स, दिल्ली, 2019
2. आर. सी. मजूमदार, हिस्ट्री ऑफ़ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया,1962
3. अम्बेडकर, अछूत कौन और कैसे (दी अनरथवल), खंड 14, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 2014
4. अमर हुतात्मा श्री भक्त फूलसिंह जी का जीवन चरित्र, आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड, गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां, सोनीपत, 1951
5. अमीचंद शर्मा, श्री वाल्मीकि प्रकाश, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, मार्च 2006
6. आशा शर्मा, सत्यानंद स्टोक्स : एन अमेरिकन इन खादी, पेंगुइन बुक, दिल्ली, 1999
7. इन्द्र विद्यावाचस्पति, मेरे पिता: संस्मरण, दिल्ली, 1957
8. उमाकांत उपाध्याय, आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास, आर्यसमाज कोलकाता, कोलकाता, 1985
9. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ़ महात्मा गाँधी, गाँधी सेवाग्राम आश्रम, 1958
10. काहनचंद जी वर्मा, क्राइस्ट ए मिथ, एस मूर्ति एंड कंपनी, द कपाली प्रेस, चेन्नई, 1918
11. के. पी. सिंह, आर्यसमाज मूवमेंट, ए स्टडी ऑफ़ सोशिओ-रिलीजियस कॉन्ससियसनेस्स इन वेस्टर्न यूपी 1875-1926, क्रिएटिव प्रिंटर्स, लखनऊ, 2002
12. के. डब्ल्यू जोंस, आर्य धर्म, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, कैलिफ़ोर्निया, 1976
13. केनेथ सोमेरलेंड मैक्डोनाल्ड, द वैदिक रिलिजन-द क्रीड एंड प्रैक्टिस ऑफ़ द इंडो आर्यन्स, लंदन, 1881
14. गंगा राम एंड चारु दास, द उपलिफ्टमेंट मूवमेंट एट सियालकोट पंजाब: ए ब्रीफ रिपोर्ट ऑफ़ द वर्किंग ऑफ़ द आर्य मेघ उद्धार सभा, सियालकोट, पंजाब, कोलकत्ता, ए. सी. सरकार, 1915
15. गंगा प्रसाद उपाध्याय, आर्यसमाज और इस्लाम, कला प्रेस, इलाहाबाद
16. गंगा प्रसाद उपाध्याय, जीवन चक्र, कला प्रेस, इलाहाबाद, 1954
17. गोपाल कृष्ण, इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, खण्ड 20, नंबर 2, जनवरी 12, 1985
18. गोपालन नायर, द मोपला रेबिलियन 1921, कालीकट, द नार्मन प्रिंटिंग ब्यूरो, 1923
19. गोबिंद चेल्लानी, आर्यसमाज और सिंध, सनी प्रिंटर्स, नई दिल्ली,1973
20. चाँदकरण शारदा, शुद्धि चंद्रोदय, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1984 (वि.)
21 चंद्रशेखर लोखण्डे (डॉ.), हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास, घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य ट्रस्ट, हिंडौन, 2004
22. चमूपति, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सचित्र इतिहास, लाहौर, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, 1935
23. जगदेवसिंह सिद्धान्ति अभिनन्दन ग्रन्थ, सिद्धान्ति अभिनन्दन समारोह समिति, दिल्ली, 1977
24. जे. टी. फ. जोर्डनस, स्वामी श्रद्धानन्द हिज लाइफ एंड कॉसेस, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1981
25 जोएल ली, डीसेपटीव मजोरिटी, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2021
26. द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ़ लाला लाजपत राय, बी. आर. नन्दा, मनोहर पब्लिकेशन, दिल्ली, 2003

27. दीप चंद वर्मा, सर छोटूरामः लाइफ एंड टाइम्स, स्टर्लिंग, 1981
28. दीवानचन्द आर्य, इतिहास की राजनैतिक त्रासदी, भानीराम मंगला प्रकाशक, पुनहाना, 1994
29. देवप्रकाश, महापुरुषों के जीवन तथा कार्य, प्रथम भाग, ला. जगत राम, अमृतसर
30. नारायण स्वामी, आत्मकथा, गुरुकुल वृन्दावन, वृन्दावन 1968
31. नारायण स्वामी, विदेशों में आर्यसमाज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, 1933
32. नेहरू, डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया, 1946
33. नरेंद्र सहगल, व्यथित जम्मू कश्मीर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 15 फरवरी 2020
34. बी. आर. अम्बेडकर, पाकिस्तान और द पार्टीशन आफ इंडिया, 1945
35. भवानीप्रसाद, बिजनौर मंडल आर्यसमाज का इतिहास, बिजनौर मंडल आर्य सम्मलेन प्रबन्धकारिणी सभा, बिजनौर, 1986 (सं)
36. भवानीलाल भारतीय, नवजागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती, श्री घूडमल प्रह्लाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिंडौन सिटी, राजस्थान, 2009
37. भाई परमानन्द, हिन्दू संगठन, लाहौर, द सेंट्रल हिन्दू युवक सभा, 1936*
38. महात्मा आनंद स्वामी, 1921 मालाबार और आर्यसमाज, आर्यसमाज वेल्लिनेषि, पालघाट, 2022
39. महान् नारी उद्धारक देवीदास आर्य अभिनंदन ग्रन्थ, नारी सेवा संस्थान, कानपुर, 2000
40. महर्षि दयानन्द सरस्वती का महत्वपूर्ण पत्र व्यवहार, डॉ. वेदपाल (सं.), परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, 2013
41. मारीशस आर्यसमाज और शुद्धि आन्दोलन, प्रह्लाद रामशरण, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 2004
42. राजेंदर प्रसाद, इंडिया डिवाइडेड, बम्बई, हिन्द किताब, 1946
43. राधेश्याम पारीख, कंट्रीब्यूशन ऑफ़ द आर्यसमाज इन मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न इंडिया, नई दिल्ली, 1973
44. लाजपतराय, अ हिस्ट्री ऑफ़ द आर्यसमाज, ओरिएंट लोंगमेन, बॉम्बे,1967
45. लाजपत राय अग्रवाल, काला पहाड़ उर्फ़ कालाचंद राय, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, 2017
46. लाजपत राय अग्रवाल, निर्णय के तट पर, भाग 6, अमर स्वामी प्रकाशन, गाजियाबाद, मई 2019
47. लेखराम, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 2000
48. हर बिलास शारदा, लाइफ ऑफ़ दयानन्द सरस्वती, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1946
49. हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक, 1976
50. हरिश्चंद्र विद्यार्थी, जम्मू कश्मीर राज्य में आर्यसमाज का इतिहास, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर राज्य, 1978
51. राजेंद्र जिज्ञासु, तड़प वाले: तड़पाती जिनकी कहानी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मंदिर, अबोहर, 2014
52. राजेंद्र जिज्ञासु, देव पुरुष पं. देवप्रकाश, पं. लेखराम वैदिक मिशन, पानीपत, 2022
53. राजेंद्र जिज्ञासु, धर्म की बलिवेदी पर, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2013
54. राजेंद्र जिज्ञासु, पं. रामचंद्र देहलवी व उनका वैदिक दर्शन, विजय कुमार गोविंदराम हासनंद, दिल्ली, 2008
55. राजेंद्र जिज्ञासु (सं), विचार वाटिका, श्री घूडमल प्रह्लाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिंडौन सिटी, राजस्थान

56. रामचंद्र जावेद, पंजाब का आर्यसमाज, जालंधर, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, 1964
57. वसंत ब. पोतदार, हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम (मराठी), विद्याभारती प्रकाशन, लातूर, द्वितीय संस्करण, 1984, हिंदी अनुवाद-अमोल दामले, पुणे
58. विजय सोनकर शास्त्री, हिन्दू वाल्मीकि जाति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2016
59. वेंकट राव पलाटी (डॉ.), रोल ऑफ फ्रीडम फाइटर इन बीदर डिस्ट्रिक्ट 1890-1948, लक्ष्मी बुक पब्लिकेशन, शोलापुर, 2014
60. वेदव्रत शास्त्री, स्वामी ओमानंद सरस्वती का जीवन चरित, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, रोहतक, 2006
61. विक्रम सम्पत, सावरकर एक भूले-बिसरे अतीत की गूंज 1883-1924, हिन्द पॉकेट बुक्स, गुरुग्राम, 2021
62. विक्रम सम्पत, सावरकर एक विवादित विरासत, विक्रम सम्पत, 1924-1966, हिन्द पॉकेट बुक्स, गुरुग्राम, 2022
63. विनायक दामोदर सावरकर, मेरा आजीवन कारावास, प्रभात प्रकाशन, 2020
64. विनोदचंद्र वेदालंकार, स्वामी श्रद्धानन्द: एक विलक्षण व्यक्तित्व, हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डौन, राजस्थान, 2002
65. शांत स्वामी अनुभवानन्द जी महाराज, मास्टर शिवचरण दास गुप्ता, प्याम ए शहीद अर्थात् धर्म के शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान पर हिन्दू शायरों के दिली जज्बात, श्रद्धानन्द साहित्य सदन, तेज प्रेस, दिल्ली, 1928
66. स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 2022
67. स्वामी स्वतन्त्रानन्द, आर्यसमाज के महाधन, हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डौन राजस्थान, 2019
68. स्वामी सेवकानन्द जीवन दर्शन, हरी सिंह शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, 26 जून 1991
69. स्वामी श्रद्धानन्द, अलार्म बेल खतरे का घंटा, आर्य साहित्य मंडल, अजमेर, द्वितीय संस्करण, 1926
70. स्वामी श्रद्धानन्द, आर्य पथिक लेखराम, विजय कुमार गोविन्दराम हासनंद, दिल्ली, 2012
71. स्वामी श्रद्धानन्द, इनसाइड कांग्रेस, गोविन्दराम हासनंद, दिल्ली, 1987
72. स्वामी श्रद्धानन्द, हिन्दू संगठन, विजय पुस्तक भण्डार, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली, 1923
73. स्त्रीत्व से हिन्दुत्व तक, चारु गुप्ता, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2012
74. सच्चिदानन्द आर्य, मैं और मेरे पिता श्री, पानीपत, 2022
75. सत्यकेतु विद्यालंकार, आर्यसमाज का इतिहास, दिल्ली, भाग 1-9
76. संतोष आर्य, शुद्धि आंदोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी, आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा, 2016
77. सरदिन्दु मुखर्जी, खलीफत मूवमेंट इन इंडिया, 1919 से 1924
78. शंकरन नायर, गाँधी एंड अनार्की, मद्रास, टैगोर प्रेस, 1923
79. शिव दयालु, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का 75 वर्षीय इतिहास 1886-1962, लखनऊ, 1963
80. श्रीराम शर्मा, महात्मा हंसराज: मेकर्स ऑफ़ द मॉडर्न पंजाब, जालंधर, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, 1941
81. श्रीरंग गोडबोले, शुद्धि आंदोलन का इतिहास, सं 712 से 1947 तक, अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर, 2018

पत्रिकाएं

1. तपोभूमि पत्रिका
2. द आर्य पत्रिका
3. द वैदिक मैगज़ीन
4. परोपकारी पत्रिका
5. विधवा बंधु, जुलाई 1927
6. शांतिधर्मी
7. शुद्धि समाचार
8. सार्वदेशिक पत्रिका
9. सद्धर्म प्रचारक
10. सुधारक

सेन्सस

1. सेन्सस ऑफ़ इंडिया, 1921, कश्मीर रिपोर्ट
2. सेन्सस ऑफ़ इंडिया, 1911, पंजाब रिपोर्ट
3. सेन्सस ऑफ़ इंडिया, 1931, पंजाब रिपोर्ट

समाचार पत्र

1. द कलकत्ता समाचार
2. द ट्रिब्यून
3. यंग इंडिया
4. लीडर

शोध ग्रन्थ

1. के. डब्लू. जोंस, द आर्यसमाज इन द पंजाब, ए स्टडी ऑफ़ सोशल रिफार्म एंड रिलिजन रिविवालिस्म 1877–1902, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया, बर्कली, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, 1966
2. प्रभु नारायण बापू, पीएचडी थीसिस कंस्ट्रक्टिंग नेशन एंड हिस्ट्री, हिन्दू महासभा इन कोलोनियल नॉर्थ इंडिया 1915–1930, यूनिवर्सिटी ऑफ़ लंदन, नवम्बर 2009
3. राष्ट्रीय अभिलेखागार रिपोर्ट्स
4. फोर्टनाईटली रिपोर्ट्स
5. होम पोलिटिकल

विविध

1. आर्य डायरेक्टरी
2. जाट गज़ट
3. सिरसा आर्यसमाज के कार्यवाही रजिस्टर, 20 अगस्त से 26 अगस्त, 1940
4. स्मारिका, पदवाक्य प्रमाणज्ञ पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, जन्म शताब्दी 14 अक्तूबर 1892–1992

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के पदाधिकारी

स्थापना वर्ष- 13 फरवरी, सन् 1923, स्थान- आगरा (उत्तर प्रदेश)

इसके बाद सभा कार्यालय लखनऊ, पश्चात् दिल्ली स्थानान्तरित

-: प्रधान :-	-: महामन्त्री :-	-: कार्यकाल :-
श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी	श्री कुवंर माधव सिंह	(सन् 1923-1924 तक)
श्री राजा रामपाल सिंह	श्री कुवंर माधव सिंह	(सन् 1925-1926 तक)
श्री राजा रामपाल सिहं	श्री स्वामी चिदानन्द जी	(सन् 1927-1930 तक)
श्री नाहरसिंह शाहपुराधीश	श्री स्वामी चिदानन्द जी	(सन् 1931-1932 तक)
श्री महात्मा नारायण स्वामी	श्री राय साहिब गंगाराम	(सन् 1933-1941 तक)
श्री नाहरसिंह शाहपुराधीश	श्री लाला गौरीशङ्कर	(सन् 1944-1945 तक)
श्री एच.एस. सर उम्मेदसिंह	श्री लाला गौरीशङ्कर	(सन् 1945-1946 तक)
श्री नाहरसिंह शाहपुराधीश	श्री लाला गौरीशङ्कर	(सन् 1947-1948 तक)
श्री डॉक्टर जमुनादास	श्री लाला गौरीशङ्कर	(सन् 1948-1949 तक)
श्री नाहरसिंह शाहपुराधीश	श्री वैद्य मूलचन्द आर्य	(सन् 1949-1950 तक)
श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी	श्री लाला नारायणदास कपूर	(सन् 1951-1954 तक)
श्री लाला हंसराज गुप्त	श्री डॉक्टर शिवलाल सूद	(सन् 1954-1955 तक)
श्री लाला हंसराज गुप्त	श्री कैप्टन जगन्नाथ	(सन् 1956-1957 तक)
श्री स्वामी अभेदानन्द जी	श्री लाला नारायणदास कपूर	(सन् 1957-1958 तक)
श्री चरणदास पुरी	श्री लाला नारायणदास कपूर	(सन् 1959-1963 तक)
श्री चरणदास पुरी	श्री द्वारकानाथ सहगल	(सन् 1964-1971 तक)
श्री हरिवंश जी	श्री द्वारकानाथ सहगल	(सन् 1976-1977 तक)
श्री रामनाथ सहगल	श्री द्वारकानाथ सहगल	(सन् 1978-1982 तक)
श्री रामभज बत्रा	श्री द्वारकानाथ सहगल	(सन् 1983-1988 तक)
श्री रामभज बत्रा	श्री मामचन्द रिवारिया	(सन् 1988-1989 तक)
श्री रामनाथ सहगल	श्री प्राणनाथ कक्कड़	(सन् 1990-2001 तक)
श्री रामनाथ सहगल	श्री राजीव भाटिया	(सन् 2002-2006 तक)
श्री रामनाथ सहगल	श्री नरेन्द्रमोहन वलेचा	(सन् 2007-2015 तक)
श्री नरेन्द्रमोहन वलेचा	श्री चतरसिंह नागर	(सन् 2016-2018 तक)
श्री रणवीर सिंह	श्री सुभाषचन्द्र दुआ	(सन् 2019-2023 तक)

लेखक का परिचय

नाम : डॉ. विवेक आर्य, **जन्म :** 28 नवम्बर 1980, **जन्म-स्थान :** जींद, हरियाणा, **माताजी का नाम :** श्रीमती संगीता आर्य, **पिताजी का नाम :** श्री सुदेश आर्य, **योग्यता :** शिशु रोग विशेषज्ञ।

आर्यसमाज में प्रवेश और कुटुम्ब परिचयः आपके परदादा जी श्री रामकिशन आर्य जी ने स्वामी दयानन्द जी के रिवाड़ी प्रवास के समय आधुनिक भारत की विश्व की प्रथम गौशाला की स्थापना के समय दर्शन किये थे। स्वामी जी का प्रवास 25 दिसम्बर 1878 से 9 जनवरी 1879 तक था। तभी से आपका सम्पूर्ण कुटुंब आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा को मानता है। आपके परदादा जी लाला लाजपत राय जी के सहयोगी थे एवं आर्यसमाज हांसी, जिला हिसार के संस्थापक सदस्यों में से थे। आपने 1902 में अपनी एक दुकान बेचकर आर्यसमाज हांसी के लिए 500 रुपया दान दिया था। आपके दादा जी ने केवल 14 वर्ष की अल्पायु में हैदराबाद आंदोलन के लिए घर-घर जाकर सत्याग्रहियों के लिए आटा और पैसा एकत्र किया था। आपके दादा जी हिंदी आंदोलन के समय आर्यसमाज हांसी के मंत्री थे। उनके वारंट निकले तो आप अपने व्यवसाय को बंदकर 2 महीने के लिए दिल्ली में भूमिगत रहकर कार्य करते रहे।

साहित्यिक कार्यः

पत्रिकाओं में लेखनः 20 वर्ष की आयु में आपका प्रथम लेख शांतिधर्मी हिंदी पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। तब से आपके आर्यसमाज की अनेक पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर शोधपरक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेक युवाओं को उनकी पीएचडी शोध ग्रन्थ लिखने में सहयोग दिया है। आपने निम्नलिखित पुस्तकों का लेखन और संपादन में श्रमदान किया है—

English

1. Swami Dayanand in the Eyes of Distinguished Scholars, 2014 (Ed.)
2. Hindu Sangathan : Savior of the dying race by Swami Shraddhanand, 2016 (Ed.)
3. Mahatma Buddha An Aryan Reformer; Dharamdev Vidyamartand, 2016 (Ed.)

4. Swami Shraddhanand by M. R. Jambunathan, 2016 (Ed.)
5. Kashi debate on Idol worship, 2019 (Ed.)
6. 1921 Aryasamaj and Malabar; Anand Swami, 2021 (Ed.)
7. Aryasamaj and Shuddhi Movement; Compiler, 2023 (Ed.)

हिन्दी

1. वेदों को जानें 2015 (सं.)
2. हिन्दू संगठन: स्वामी श्रद्धानन्द, 2015 (सं.)
3. काशी शास्त्रार्थ के 150 वर्ष, 2019 (सं.)
4. मूर्तिपूजा शंका समीक्षा, 2019 (सं.)
5. मूर्तिपूजा निषेधांक, 2019 (सं.)
6. इस्लाम के दीपक, गंगा प्रसाद उपाध्याय, 2020 (सं.)
7. वैदिक धर्म की जय, मुनीश्वरदेव जी, 2020 (सं.)
8. ऋषि बोध गाथा, स्वामी वेदानन्द, 2020 (सं.)
9. दयानन्द का राष्ट्रवाद, सत्यदेव वेदालंकार, 2020 (सं.)
10. 1921 आर्यसमाज और मालाबार, महात्मा आनंद स्वामी, 2021 (सं.)
11. हमें आज़ादी किसने दिलाई, लेखक, 2022 (सं.)
12. स्वामी वेदानंद तीर्थ के आत्म संस्मरण, सत्यानंद शास्त्री, 2022 (सं.)
13. सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव, स्वामी वेदानन्द, 2022 (सं.)
14. वेद बंगाल और दयानन्द, संपादक, 2022 (सं.)
15. स्वामी श्रद्धानन्द, आर्यसमाज और गुरु का बाग मोर्चा, 2022 (सं.)
16. मैंने ईसाई मत क्यों छोड़ा, अरुण आर्यवीर, 2022 (सं.)
17. मनुस्मृति को जानें, लेखक, 2022 (सं.)
18. आर्यसमाज और शुद्धि आंदोलन का इतिहास, लेखक, 2023 (सं.)

आगामी पुस्तकें

1. वेदों को जानें (बृहद् ग्रन्थ का लेखन), लेखक
2. मेरे भाई शहीद सुखदेव, मथरा दास थापर (सं.)
3. पं. रामचंद्र देहलवी लेखावली (सं.)

आपकी अनेक पुस्तकों का बांग्ला, मलयालम, मराठी, नेपाली और पंजाबी भाषा में अनुवाद होकर प्रकाशित हो चुका है।

सोशल मीडिया में कार्य:

आपने सर्वप्रथम Yahoo Groups से आर्यसमाज के लिए लिखना आरम्भ किया था। उसके पश्चात् आप Orkut के मंच से कार्य करते थे। तत्पश्चात्

Facebook, Blogger, WhatsApp, Twitter आदि के माध्यम से पिछले 2 दशकों से कार्य कर रहे हैं। आपने इस दीर्घ काल में सामयिक, ऐतिहासिक, जीवनियां, सैद्धांतिक, खंडन-मंडन, वेद विषयक, शंका समाधान आदि विषयों पर हज़ारों लेख प्रचार हेतु प्रकाशित किये हैं। जिनका लाभ वर्तमान युवा पीढ़ी को देश-विदेश में मिलता रहा है। आपके द्वारा फेसबुक पर www.facebook.com/arya.samaj के नाम से 3 लाख सदस्यता वाला आर्यसमाज का पेज पिछले कई वर्षों से निरंतर संचालित हो रहा है। जिस पर प्रतिदिन 6 लेख, पुस्तक परिचय इत्यादि हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित हो रहे हैं। इसका लाभ लाखों लोगों को प्रतिदिन मिलता है। आपके द्वारा WhatsApp के माध्यम से देश-विदेश के 50 से अधिक समूह संचालित हैं। जिनके माध्यम से हज़ारों लोग प्रतिदिन लाभान्वित हो रहे हैं। आप पुराने वैदिक साहित्य के संरक्षण, पुनर्मुद्रण एवं प्रचार हेतु विशेष रूप से सक्रिय हैं। आपके ब्लॉग vedictruth.blogspot.com पर 500 से अधिक लेख हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। अन्ततः यह नितांत सत्य है कि वर्तमान पीढ़ी में सोशल मीडिया में आपके जैसा स्तरीय, शोधपरक, सामयिक, ऐतिहासिक और सकारात्मक लेखन करने वाला सम्पूर्ण आर्यजगत् में कोई नहीं है।

केरल में सहयोग कार्य

आपकी शिक्षा दक्षिण भारत में हुई थी इसलिए आपका दक्षिण भारत में विशेष प्रचार रहा है। केवल 23 वर्ष की आयु में आपने 75 हज़ार रुपये दान एकत्र कर स्वर्गीय आचार्य नरेंद्र भूषण जी को सहयोग कर सत्यार्थ प्रकाश के मलयालम संस्करण का प्रकाशन करवाया था। तत्पश्चात् श्री के एम. राजन जी के संपादन में सत्यार्थ प्रकाश का पुनः मलयालम संस्करण प्रकाशन करवाया। आपने बाइबिल फॉर्मेट में मलयालम भाषा के सत्यार्थ प्रकाश का 8000 की संख्या के विशेष संस्करण के साथ-साथ मलयालम की 20 छोटी बड़ी पुस्तकों का भी प्रकाशन करवाया है। आपके प्रयासों से केरल में श्री के. एम. राजन द्वारा छात्रों के गुरुकुल की 2015 में स्थापना हुई। इसके साथ समृद्ध पुस्तकालय और गौशाला भी बनाई गई है। इस गुरुकुल को आपका निरंतर सहयोग और सान्निध्य मिल रहा है। 2023 में छात्राओं के लिए भी अनौपचारिक रूप से गुरुकुल की स्थापना की गई है। केरल जैसे प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु आपका सहयोग वास्तव में अप्रतिम है।

पुस्तक मेलों में योगदान

साहित्य को आर्य समाज की चारदीवारियों से बाहर निकालकर उसका प्रचार करने के लिए आपने विशेष रूप से पुरुषार्थ किया। 2014 में नेशनल बुक ट्रस्ट के द्वारा आयोजित पुस्तक मेलों के माध्यम से आपकी सलाह पर पुस्तक मेलों में आर्य समाज ने भाग लेना प्रारंभ किया। यह प्रचार क्षेत्र में एक नवीन अध्याय जोड़ने के

जैसा था। इन वर्षों में लेह-लद्दाख से त्रिवेंद्रम तक, मुंबई से लेकर शिलांग जैसे सुदूर स्थलों पर पुस्तक मेलों में भाग लिया गया। सबसे अधिक प्रभावशाली प्रगति मैदान दिल्ली में लगने वाला राष्ट्रीय पुस्तक मेला था। आपके प्रयासों से कोलकाता पुस्तक मेले में भी आर्यसमाज का स्टॉल लगना आरंभ हुआ है। इस कार्य में आपका दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज कोलकाता के श्री सुरेश अग्रवाल एवं बरेली के स्वर्गीय राजेंद्र आर्य जी ने विशेष पुरुषार्थ किया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पुस्तक मेले से साहित्य प्रचार, प्रसार, रचना, प्रकाशन को आपके किए गए पुरुषार्थ द्वारा जो गति मिली, वह अद्वितीय है।

प्रेरक वक्ता

आपके वक्ता के रूप में अनेक व्याख्यान दिल्ली के पुस्तक मेले से लेकर देश के विभिन्न आर्यसमाजों में हो चुके हैं। जिनमें आर्यसमाज चेन्नई, मुंबई, इंदौर, दिल्ली, जींद आदि शामिल हैं। आपके भाषण के मुख्य विषय मनुस्मृति सम्बंधित भ्रांतियां, योगिराज श्री कृष्ण, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, आर्यसमाज का इतिहास आदि हैं। आप पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन से अपना प्रभावशाली वक्तव्य देते हैं। जिसे सुनने के लिए अनेकों युवा विशेष रूप से आते हैं।

दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह

आपने अपने अथक प्रयासों से आर्यसमाज की दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह किया है। वर्तमान में आपके पास 3500 पुस्तकें 30 अलमारियों में सुरक्षित है। यह समृद्ध पुस्तकालय आपने आर्यसमाज के साहित्य को सुरक्षित करने, शोध करने, पुनः प्रकाशित करने और नवीन साहित्य के प्रकाशन की दृष्टि से किया है। यह पुस्तकालय आर्यसमाज की महत्वपूर्ण सम्पदा है।

आप सदैव युवाओं को सकारात्मक बने रहने, स्वाध्याय करने, आचरणवान् बनने, कैरियर के प्रति गंभीर बनने की प्रेरणा देते हैं। एक सफल चिकित्सक होने के साथ आप नित्य संध्या, योगासन-प्राणायाम, हवन आदि में विशेष रूचि रखते हैं। अपनी व्यस्त दिनचर्या में भी अपने परिवार और व्यवसाय को न्यायपूर्वक समय देते हुए आप इतना कार्य कर रहे हैं, यह आपके व्यक्तित्व, उद्यमशीलता और स्वामी दयानन्द के मिशन के प्रति समर्पण भाव को प्रदर्शित करता है। वास्तव में आप एक व्यक्ति नहीं अपितु चलती फिरती संस्था हैं। जितना मुझे ज्ञात था, मैंने आपका यहाँ वो परिचय दिया है। जो मुझे नहीं ज्ञात है, उसके लिए मैं क्षमार्थी हूँ। आप मेरे गुरु, मार्गदर्शक, मित्रवत हैं।

प्रियांशु सेठ (वाराणसी)

शुभकामना संदेश

स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा स्थापित भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के 100 वर्ण पूर्ण होने पर शुद्धि सभा के इतिहास के हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित होना गर्व की बात है। मैं इसके लिए शुद्धि सभा और डॉ विवेक आर्य को बधाई देता हूं। आशा करता हूं कि इस शोध ग्रंथ से आगामी पीढियां लाभान्वित होंगी।

डॉ सत्यपाल सिंह
संसद सदस्य एवं पूर्व पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री

शुभकामना

स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, भारत रत्न महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी द्वारा 13 फरवरी, 1923 को स्थापित आर्य समाज की अत्यंत ओजस्वी संस्था **"भारतीय हिंदू शुद्धि सभा"** के स्वर्णिम शतक अर्थात शताब्दी पूर्ण करना हम सब के लिए गर्व का विषय है। इस अवसर पर सभा के गौरवशाली प्रमाणिक इतिहास को हिंदी एवं अंग्रेजी में लिखा जा रहा है। मेरा निश्चित मत है कि यह पुस्तकें भावी पीढ़ी के ज्ञान वर्धन, धर्म के प्रसार, प्रेरणा और शोधार्थियों के लिए संदर्भ ग्रंथ का कार्य करेगा।

प्रबल प्रताप सिंह जूदेव
अखिल भारतीय घर वापसी प्रमुख
छत्तीसगढ़